

पद २८१

(रागः पिलु जिल्हा - तालः दीपचंदी)

शामपर मत डारो राधे चोरी ॥ध्रु.॥ बाहर शाम गयो नहि राधे ।
तापर ये बरजोरी ॥१॥ छोटीसी सूरत खेले अंगनामो । कब आवे
घर तेरी ॥२॥ मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी । ताके चरनन जाउं
बलिहारी ॥३॥